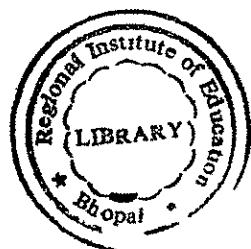


अध्याय-द्वितीय



अध्याय - द्वितीय



21 साहित्य का पुनरावलोकन

साहित्य का “पुनरावलोकन” प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन कार्य है। समस्या से सबधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। सबधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र—पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध—प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। सबधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए बार तथा स्केट्स (1956) कहते हैं—

“एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सबधी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सबधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिये शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धात एवं शोधों से भलीभाति परिचित होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित

करने के लिये व्यवहारिक ज्ञान से प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धांतिक एवं शोधित साहित्य को पुर्णनिरीक्षण शब्द को, इस प्रकार परिभाषित किया गया है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार—

“व्यवहारिक रूप से संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तक और पुस्तकालय में मिल सकता है। ज्ञान के विस्तृत भण्डार में उसका योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गये प्रयासों की सफलता को सभव बनाता है।”

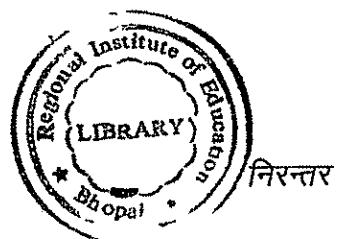
संबंधित शोध कार्य

ऐवेतोम्बी (1989) ने मणीपुर के सेकेण्डरी विद्यालयों में शालेय स्वास्थ्य शिक्षा की सुविधाओं का अध्ययन किया। मणीपुर के पच्चीस विद्यालयों से प्रश्नावली द्वारा आकड़े प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि मणीपुर के सेकेण्डरी विद्यालयों में खेल की सुविधाएं अपर्याप्त थीं। खेलों का सामान पर्याप्त नहीं था। खोलों के लिए दो जाने वाली धनराशि भी पर्याप्त नहीं थीं।

धानोकर (1989) ने बुलधाना जिले में 1983, व 1987 के मध्य शासकीय और अशासकीय सेकेण्डरी विद्यालयों में खेलों में उपलब्धियों का अध्ययन किया यह तुलनात्मक अध्ययन था इस अध्ययन में पाच शासकीय और पाच अशासकीय विद्यालयों को चुना गया और प्रश्नावली द्वारा आकड़े प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि अशासकीय विद्यालयों में खेल सुविधाएं अधिक हैं। जबकि शासकीय विद्यालयों में खेल उपलब्धिया अधिक है।



सखारे (1989) ने यावात्मल शहर के सेकेण्डरी विद्यालयों में खेलों में सुविधाएँ और छात्रों की भागीदारी का अध्ययन किया। प्रश्नावली द्वारा तीन सेकेण्डरी विद्यालयों से आकड़े प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि यावात्मल शहर के विद्यालयों में खेलों के लिये पर्याप्त सुविधाएँ नहीं हैं जिसके परिणामस्वरूप खेलने वालों की भागीदारी भी कम है।

विद्यार्थी (1987) ने बिहार के गया जिले के सेकेण्डरी शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा की सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में दस शासकीय और दस अशासकीय विद्यालयों से प्रश्नावली द्वारा आकड़े प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि अशासकीय विद्यालयों में खेल का सामान, क्रीड़ा स्थल, खेल शिक्षक तथा खेलों की अन्य सुविधाएँ अपर्याप्त हैं शासकीय विद्यालयों की तुलना में।

गुलहाने (1989) ने करजा तहसील में सेकेण्डरी विद्यालयों में सुविधाएँ और खेल से प्राप्त उपलब्धियों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में बीस सेकेण्डरी विद्यालयों से आकड़े प्राप्त किये गये। प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा स्वास्थ्य शिक्षा शिक्षकों द्वारा जानकारी प्राप्त की गयी।

इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि खेल की सुविधाएँ खेलों की उपलब्धियों पर अधिक प्रभाव डालती हैं।

पाटिल (1986) ने चालीसगन तहसील के सेकेण्डरी विद्यालयों में खेल की सुविधाओं और उनसे प्राप्त उपलब्धियों का सर्वेक्षण किया। प्रश्नावली द्वारा चालीसगन तहसील के चौदह सेकेण्डरी विद्यालयों से आकड़े प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि खेल की सुविधाएँ विद्यालय में पर्याप्त नहीं थीं। खेल का सामान पर्याप्त नहीं था।



निरन्तर

देव (1987) ने त्रिपुरा के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में खेल की सुविधाओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन कार्य में त्रिपुरा जिले के चौदह विद्यालयों का अध्ययन किया और प्रश्नावली द्वारा सूचना प्राप्त की।

इस अध्ययन कार्य का निष्कर्ष यह निकला कि खेल की सुविधाएं अपर्याप्त थीं। खेल शिक्षकों की कमी पायी गयी खेल सामग्री अपर्याप्त पायी गयी।

वर्गिस (1991) ने शालेय स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम बनाने के लिये प्राथमिक शालाओं के छात्रों के स्वास्थ्य का स्तर और उसका उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि स्वास्थ्य स्तर एवं बुद्धि में सार्थक संबंध है।

